सामाजिक संस्था सम्पूर्णा

समग्र विकास की ओर अग्रसर
गैर सरकारी संगठन

आलेख

प्रशंसा करो, सुखी रहो

-डॉ. शोभा विजेन्द्र
संस्थापिका, सम्पूर्णा

हाल के काल में मानव मात्र के सबसे सहज गुण यानि किसी दूसरे की प्रशंसा करना, सबसे मुश्किल कार्य हो गया है। कल ही की तो बात है, मीरा, मेरी बचपन की सहेली है। कई वर्षों के बाद मिली। इतने वर्षों के बाद किसी सहेली का मिल जाना ऐसा लगता है जैसे कितने फूल एक साथ खिल गए। हम दोनों एक दूसरे को देखकर बार-बार मुस्कुरा रहे थे और आंखों ही आंखों में एक दूसरे के प्रति प्रेम और प्रगाढ़ता की स्वीकृति दे रहे थे। गौरवर्ण, बड़ी-बड़ी आंखों वाली सोलह श्रंगार किए मेरी सहेली बहुत ही खुबसूरत लग रही थी। ऐसा लग रहा था जैसे आज का दिन तो बन ही गया। अब धीरे-धीरे घर और परिवार की बातें भी होने लगीं। वह अपने परिवार में बहुत खुश थी। मैं चाहती भी यही थी कि कोई भी गम मेरी सहेली को दूर तक भी न छू जाए। तभी अन्य सहेलियों के विषय में भी बात होने लगी। जैसे ही मैंने उसे दीपा के विषय में बताया कि वह आज सामाजिक क्षेत्र में उंचाइयों को छू रही है, मेरी सहेली का चेहरा बदल गया। वो कहने लगी कि अरे! यह भी कुछ होता है। घर छोड़कर, स्त्री यदि घर से बाहर निकल ही जाए तो अवश्य ही उंचाइयों को क्यों नहीं पा लेगी? मीरा जो अभी तक खुशी और सुख की एक प्रति मूर्ति दिखाई दे रही थी, एकदम जैसे बदल ही गई। हमने भी तो बहुत पढ़ाई की है। हम भी तो हर चीज में अव्वल ही रहते थे। घर से निकलने का मौका ही नहीं मिला। मैं सोचने लगी कि मेरे से क्या जुर्म हो गया? जो मैंने दीपा की तारीफ कर दी। यह दोष, जिस पर कोई चर्चा नहीं करता आज के पढ़े-लिखे, नए-नए धनाढ्य लोगों का सबसे बड़ा दोष है। स्त्री-पुरूष, बड़ा-छोटा, कोई इससे बचा नहीं है। और यही कारण है कि शारीरिक बीमारियों के साथ-साथ, बड़ी संख्या में दुःख, अवसाद, चिड़चिड़ेपन और क्रोध से पीड़ित हैं। देखिए ना! कल ही तो अग्निपथ योजना पर आलेख लिखा था। लगा था कि देश में अनुशासन और राष्ट्रभक्ति की नयी बयार बहेगी। लेकिन कुछ उपद्रवियों ने इस पर बवाल मचा दिया। हिंसा करना, क्या समस्याओं का हल है? या समस्याओं को पैदा करना है? चारों और दूषित होते वातावरण में विरोधी पार्टियां भी अपने हाथ मैले करने का एक विषय भी नहीं छोड़तीं। वरिष्ठ नेताओं के ट्वीट और विचार, अग्निपथ योजना के ऐसे पहलुओं पर नजर डाल रहे हैं, जो योजनाकार कभी स्वप्न में भी नहीं सोच सकते। आज के लिए इतना ही कहूंगी कि विरोधी पार्टियों को भी राष्ट्रभक्ति जैसे विषयों पर सकारात्मक विचार ही रखने चाहिएं। मीरा की तरह, अपनी ही सहेली की सफलता से दुःखी नहीं होना चाहिए।